गोवंश वध पर प्रतिबंध विहिप की जीत

- विहिप के अंतरराष्ट्रीय उपाध्यक्ष हुकुमचंद सांवला ने कहा
- हिंदू हित की खिलाफत करने वाले हर दल का करेंगे विरोध

भास्कर न्यूज.खंडवा

बारहवीं पंचवर्षीय योजना में तनेजा कमेटी की गोमांस निर्यात पर लगे प्रतिबंध को हटाने की अनुशंसा को यूपीए सरकार ने साधु-संतो के आग्रह पर नकार दिया है। केंद्र की कांग्रेस समर्थित यूपीए सरकार ने गोमांस के निर्यात पर एनडीए शासन के लगाए प्रतिबंध को स्वीकार किया है। यह गोरक्षा के लिए चलाए जा रहे विश्व हिंदू परिषद (विहिप) के आंदोलन की जीत है। यह बात निजी प्रवास पर खंडवा आए विहिप के अंतरराष्ट्रीय उपाध्यक्ष हुकुमचंद सांवला ने भास्कर से चर्चा में कही।

उन्होंने कहा विहिप किसी पार्टी के बंधुआ मजदूर नहीं है। भाजपा हो या कोई अन्य दल जो भी हिंदू हितों के खिलाफ जाएगा, उसका विरोध करेंगे। श्री सांवला ने मप्र में गोरक्षा कानून बनाए जाने पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा इसे सख्ती के साथ प्रदेश में लागू किया जाना चाहिए।

तीन साल में तैयार होगा श्री राम मंदिर

श्री सांवला ने कहा श्री राम मंदिर निर्माण के लिए 80 प्रतिशत से अधिक पत्थरों के तराशने का काम पूरा कर लिया है। जन्मभूमि विवाद का मामला सुप्रीम कोर्ट में है, निर्णय आने के बाद तीन साल में मंदिर तैयार कर देंगे। 2013 में होने वाले कुंभ के समय मंदिर निर्माण के संबंध में धर्म संसद जो निर्णय करेगी उसका विहिप पालन करेगी। स्वामीजी द्वारा हिंदू धर्म को वैज्ञानिक एवं प्रगतिशील बनाने की विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए मार्च 2013-14 तक उनकी 150वीं जन्मशती मनाया जाएगा। इसमें युवक-युवतियों, महिलाओं और किसानों को जोड़कर आगे बढ़ाते हुए सारे देश में विवेकानंदजी के विचारों को खड़ा करेंगे।

इंडो थाई NSE/BSE/CURRENCY/MCX/NCDEX फ्रेंचायजी/ट्रेडिंग/टर्मिनल के लिये संपर्क करें सिक्युरिटीज लि. CALL: 099777 99919, 098260 19761

बस पलटी, 15 यात्री घायल

पचमढ़ी ... पाइंट गुर... रहेंगे बंद

पशुवधशाला बंद करने के आदेश पर स्टे

• ठेकेदार ने हाईकोर्ट के फैसले की प्रति नगरायुक्त को दी

मेरठ, जागरण संवाददाता : पर्यूषण पर्व के चलते पशुवध शाला को प्रशासन के आदेश को चुनौती देने वाली ठेकेदार की याचिका को स्वीकारते हुए उच्च न्यायालय ने स्थगनादेश जारी किया। आदेश की प्रति शुक्रवार को नगर आयुक्त व प्रशासनिक अधिकारियों को सौंप दी गयी है। गौरतलब है कि जैन समाज द्वारा पर्यूषण पर्व के चलते पशुवधशाला व मीट की दुकानों पर बिक्री बंद जाने की मांग को ध्यान में रखते हुए प्रशासन ने पांच सितम्बर तक रोक लगा दी थी। जिसके चलते कमेले में कटान का काम रोक दिया गया था। प्रशासन के इस फैसले के खिलाफ ठेकेदार इमरान कुरैशी ने हाईकोर्ट में याचिका दायर करते हुए कहा कि सुप्रीम कोर्ट के जिस निर्णय को आधार मानकर जिला प्रशासन ने पशुवधशाला में कटान रोकने का आदेश दिया है। वह गुजरात में क्षेत्र विशेष के लिए दिया गया था। हाईकोर्ट ने श्री कुरैशी की याचिका मंजूर करते हुए स्थगनादेश दिया है। ठेकेदार ने शुक्रवार को आदेश की प्रति नगरायुक्त को सौंपते हुए पशुवधशाला में कटान शुरू कराने की मांग की। नगरायुक्त संजय कृष्ण ने बताया कि उक्त आदेश की प्रति को जिला प्रशासन को भेज दिया गया है। उन्होंने बताया कि कटान रोकने का आदेश केवल पांच सितम्बर तक ही था। कटान के बारे में अगला फैसला शनिवार को लिया जायेगा।

सहायक सफाई नायक विवाद की पत्रावली तलब

मेरठ : नगर निगम में सहायक सफाई नायक पद पर नियुक्तियों के मामले में सफाई कर्मचारियों ने शुक्रवार को मंडलायुक्त कार्यालय पर प्रदर्शन कर नियुक्तियों को निरस्त करने व दोषियों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की। अपर आयुक्त ने विवाद की पत्रावलियां तलब की है। उत्तर प्रदेश सफाई मजदूर संघ के महामंत्री इंद्र कुमार सूद की अगुवाई में कार्यवाहक मंडलायुक्त जितेन्द्र सिंह को सौंपे गये ज्ञापन में आरोप लगाया गया है कि निगम में सहायक सफाई नायक का कोई पद सृजित न होने के बाद भी लगभग पचास कर्मचारी इस काम में लगे हैं। जिलाधिकारी व अन्य अधिकारियों द्वारा इस बारे में कई बार निर्देशित किये जाने के बाद भी उक्त कर्मचारी अपने मूल पदों का काम नहीं देख रहे हैं। निगम प्रशासन की मिलीभगत से हाजिरी रजिस्टर लेकर केवल उगाई का काम करने का आरोप भी लगाते हुए उक्त कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की। अपर आयुक्त जितेन्द्र सिंह ने नगर आयुक्त को पत्र लिखकर विवाद की पत्रावली तलब कर कार्रवाई के निर्देश दिये हैं।

कॉलेजों में भी मेंढकों की चीर-फाड़ बंद

भोपाल(नप्र)। कॉलेजों व विश्वविद्यालयों के प्राणी शास्त्र के विद्यार्थी अगले कुछ माह बाद जिंदा मेंढकों, केंचुओं व मछलियों का डिसेक्शन (अंग विच्छेदन) नहीं कर सकेंगे।

- कम्प्यूटर व मॉडल्स से सीखेंगे डिसेक्शन

प्रयोगशाला के बजाए विद्यार्थी जंतुओं का डिसेक्शन मॉडलों और कम्प्यूटर पर सीखेंगे। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) कॉलेजों व विश्वविद्यालयों की प्रयोगशालाओं में होने वाले मेंढकों, केंचुओं सहित अन्य प्रजातियों के जंतुओं का डिसेक्शन बंद करने की तैयारी कर रहा है। इससे पहले 'स्कॉलियोडॉन' नामक शार्क प्रजाति की मछली का डिसेक्शन बंद किया जा चुका है। बताया जाता है कि यह कदम विलुप्त हो रहीं प्रजातियों को बचाने के लिए उठाया जा रहा है ताकि प्रकृति की जैव विविधता को खतरा पैदा न हो।

जबलपुर, सोमवार 04 जनवरी 2010 | नईदुनिया 03

पर्यावरण बचाना है तो कम खाइए मांस

लंदन, एजेंसी । बेमौसम बारिश और धरती का बढ़ता तापमान जलवायु परिवर्तन का ही नतीजा है। अगर पर्यावरण को बचाना है तो आपको अपने मांसाहारी भोजन में कटौती करनी होगी। एक नए अध्ययन में कहा गया है कि भविष्य में जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणामों से बचने के लिए मांस की खपत 50 प्रतिशत तक कम करनी होगी।

एनवायरमेंटल रिसर्च लेटर्स में प्रकाशित अध्ययन में चेतावनी दी गई है कि ग्लोबल वार्मिंग के खतरे से बचने के लिए वर्ष 2050 तक खाद्य उत्पादन और भोजन की आदतों में महत्वपूर्ण बदलाव की जरूरत है। जलवायु परिवर्तन का मुकाबला करने के लिए यह सबसे कठिन चुनौती है कि खाद्यान्न उत्पादन से ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कैसे कमी लाई जाए। कारण इस शताब्दी के मध्य तक विश्व की जनसंख्या नौ अरब तक पहुंच जाने की संभावना है। मैसाच्युसेट्स के वुड्स होल रिसर्च सेंटर के निदेशक इरिक डेविडसन के अध्ययन में कहा गया है कि विकसित देशों को खाद के प्रयोग में 50 प्रतिशत कमी करनी होगी और लोगों को मांसाहारी भोजन में कटौती करनी होगी। विकसित देशों में लोग नियमित रूप से मांस खाते हैं। वहीं भारत और चीन में समृद्धि बढ़ने के साथ ही मांस के खपत में वृद्धि हुई है। 'द गार्जियन' अखबार की रिपोर्ट के मुताबिक कुछ वैज्ञानिक कृत्रिम तरीके से मांस का उत्पादन करने के प्रयास में जुटे हुए हैं ताकि जलवायु परिवर्तन के लिए उत्तरदायी खादों के प्रयोग से बचा जा सके।

वैज्ञानिकों की सलाह

- भोजन की आदतों में महत्वपूर्ण बदलाव जरूरी

सबसे अधिक ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जित होती है खाद से

पशुओं के चारे के लिए उपजाए जाने वाले अनाजों के लिए जो खाद प्रयोग की जाती है, उनसे सबसे अधिक ग्रीन हाउस गैस (मिथेन, कार्बन डाइ आक्साइड, नाइट्रस आक्साइड) उत्पन्न होती है। इससे जलवायु परिवर्तन को बढ़ावा मिलता है। खादों द्वारा छोड़ा जाने वाला नाइट्रस ऑक्साइड ग्रीन हाउस गैसों में सबसे शक्तिशाली है। संयुक्त राष्ट्र के जलवायु संबंधी निकाय ने इस गैस के उत्सर्जन में कमी लाने की मांग की है।

दैनिक जागरण, भोपाल 16-04-2012

पारदर्शी मेंढक रोकेंगे मेंढकों की चीरफाड़

नई दिल्ली

अब जिंदा मेंढकों को काटने के लिए मोम की प्लेट पर सुइयों से बींधने की जरूरत नहीं पड़ेगी क्योंकि प्रयोगों में इस्तेमाल के लिए खास तौर पर विकसित पारदर्शी मेढक अगले छह महीनों में प्रयोगशालाओं तक पहुंच रहे हैं। करीब दो साल पहले प्रयोगशाला में तैयार पारदर्शी मेढकों के बाद अब जापान के ही वैज्ञानिकों ने पारदर्शी मछलियां भी तैयार करने में सफलता हासिल कर ली है और उन्हें आशा है कि अगले छह महीनों में प्रयोगशालाओं और स्कूलों के लिए इनकी बिक्री शुरु हो जायेगी। मेंढकों की ही तरह पारदर्शी गोल्डफिश का भी धड़कता दिल बाहर से ही नजर आता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि अब काफी हद तक परीक्षणों के लिए उन्हें मारने की जरूरत नहीं पड़ेगी। प्रयोगों के दौरान स्कूलों में ही बच्चों को मेंढक कटना पड़ता है जिसके चलते कई छात्र जीव विज्ञान विषय ही छोड़ देते हैं। यही नहीं पशुप्रेमी भी वर्षों से मेंढकों के काटे जाने पर उंगलियां उठाते रहे हैं। इन्हीं सबके चलते वैज्ञानिकों ने पहले पारदर्शी मेंढक बनाये और अब गोल्डफिश। जापान की माय यूनीवर्सिटी के जीव विज्ञान के एसोसिएट प्रोफेसर यूताका तगारू का कहना है कि पिगमेंट के न होने के कारण इस गोल्डफिश की त्वचा एकदम पारदर्शी है जिससे इसका न केवल धड़कता दिल धक-धक करता बाहर से ही साफ दिखाई देता है बल्कि आंख के ऊपर दिमाग तथा अन्य अंग भी काम करते हुए देखे जा सकते हैं। श्री यूताका ने कहा कि अब वैज्ञानिकों को इनके अंगों पर परीक्षण करने के लिए उसका शरीर काटकर देखने की जरूरत नहीं होगी क्योंकि अधिकांश परिस्थितियों में अब उनके अंगों पर पड़ने वाले असर को बाहर से ही काम करते या उन पर परीक्षण के असर को बिना काटे ही देखा जा सकेगा। माय यूनिवर्सिटी तथा नगोया यूनिवर्सिटी के संयुक्त प्रयासों से तैयार ये गाइकिन नाम की यह गोल्डफिश करीब बीस साल तक जिन्दा रहेगी तथा इसकी लंबाई भी करीब दस इंच और वजन दो किलो तक बढ़ाया जा सकेगा। हिरोशिमा यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक प्रोफेसर मासायूकी सुमीदा का कहना है कि अब इन पारदर्शी मेढकों का बड़े पैमाने में उत्पादन शुरु कर दिया गया है।